विनोबा कथावली

■ वर्ष : द्वितीय ■ अंक : 5 ■ दिसम्बर 2025

टाँकीटोला: जहाँ छात्र मिलें, वहीं शाला

टाँकीटोला (सिवनी): जून 2020 का महीना था, जब पूरी दुनिया कोरोना की दहशत और लॉकडाउन के कारण घरों में सिमटी थी। ऐसे में, सिवनी ज़िले के बरघाट विकासखंड का टाँकीटोला गाँव एक अनोखा दृश्य देख रहा था। कहीं नीम के पेड़ के नीचे, कहीं चबूतरे पर, तो कहीं चौपाल पर बच्चों की कक्षाएं चल रही थीं।

यह कमाल था टाँकीटोला के सरकारी स्कूल के प्रभारी हेडमास्टर श्री प्रमोद कुमार मेश्राम जी और उनके साथियों का। इंटरनेट नेटवर्क की समस्या से जूझ रहे अपने छात्रों की पढ़ाई जारी रखने के लिए, उन्होंने 'सोशल डिस्टेंसिंग' का पालन करते हुए, शिक्षण सामग्री का बंडल उठाया और गाँव में निकल पड़े।

उनका अभियान था — 'जहाँ मिलें, वहीं पढ़ें'। जहाँ भी एक छात्र मिला, वहीं एक पाठ पढ़ाया गया, वहीं गृहकार्य दिया गया। कोरोना के मुश्किल समय में भी टाँकीटोला के बच्चों की पढ़ाई नहीं रुकी।

लेकिन यह अनोखा अभियान प्रमोद जी के उस बड़े संकल्प का सिर्फ एक हिस्सा था, जिसके तहत वह गाँव के सरकारी स्कूल में बच्चों के घटते नामांकन को फिर से बढ़ाना चाहते थे।

दरअसल, प्रमोद जी को यह बात चुभती थी कि अभिभावक बच्चों को हज़ारों रुपये खर्च करके, सात किलोमीटर दूर निजी स्कूलों में भेज रहे थे। जबकि गाँव में ही निःशुल्क और बेहतर शिक्षा का विकल्प मौजूद था। प्रभारी हेडमास्टर का पद मिलते ही, उन्होंने इस धारणा को बदलने का निश्चय किया।

उन्होंने गर्मी की छुट्टियों में घर-घर जाकर अभिभावकों को समझाया कि सरकारी स्कूलों में प्रशिक्षित शिक्षक हैं, साथ ही निःशुल्क मिड-डे मील, वर्दी और किताबें भी मिलती हैं। अपनी बात सिद्ध करने के लिए, उन्होंने एक सरकारी छात्र की शैक्षिक क्षमता की तुलना एक निजी छात्र से भी करके दिखाई। उनकी मेहनत रंग लाई और अभिभावक अपने बच्चों को वापस गाँव के स्कूल में लाने पर विचार करने लगे।

प्रमोद जी जानते थे कि उन्हें विश्वास की इस डोर को मज़बूत करना होगा। उन्होंने सरकारी सहायता का इंतज़ार नहीं किया। उन्होंने स्वयं स्कूल की वित्तीय सहायता कर, कुछ सुधार किए, जैसे कि, बच्चों के बैठने और मिड-डे मील खाने के लिए एक चबूतरा बनवाया और पीने के पानी के लिए टंकी और नल लगवाए। जब गाँव वालों ने उनका समर्पण देखा, तो ग्राम पंचायत ने भी उनका साथ देना शुरू कर दिया। पंचायत सक्रिय रूप से स्कूल के कायाकल्प में शामिल हो गई।

स्कूल में पढ़ाई को मनोरंजक बनाने के लिए, उन्होंने दैनिक जीवन के उदाहरणों से गणित और विज्ञान पढ़ाया, तथा रोल-प्ले का इस्तेमाल किया। उन्होंने 'पहल जैसे वार्षिक कार्यक्रम भी शुरू किए, जहाँ छात्रों को सम्मानित किया जाता था।

प्रमोद जी के इन अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि आज उनके स्कूल ने पूरे क्लस्टर के 40 स्कूलों में सर्वाधिक नामांकन हासिल किया है। उन्हें तीन बार कलेक्टर द्वारा सम्मानित किया गया है और तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया है।

आज प्रमोद जी विनोबा कार्यक्रम और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के AI-आधारित 'विनोबा ऐप' के समर्थन के लिए आभार व्यक्त करते हैं। 'मेटा' और 'द नज इंस्टिट्यूट' के सहयोग से विकसित यह AI टूल शिक्षकों को स्थानीय भाषा में छात्रों की योग्यता (कम, मध्यम, उच्च) के अनुसार वर्कशीट और गतिविधियाँ बनाने में मदद करता है।

प्रमोद जी ने साबित कर दिया कि एक शिक्षक का संघर्ष टाँकीटोला के छात्रों के लिए बेहतरीन शिक्षा का अनुभव तो देता ही है, साथ ही अभिभावकों का सरकारी स्कूलों में भरोसा भी बढ़ाता है। उन्होंने दिखा दिया कि सरकारी स्कूल न केवल निजी स्कूलों के बराबर हो सकते हैं, बल्कि हर मायने में उनसे बेहतर भी हो सकते हैं। ■

'अलग होना, कम होना नहीं है'

3 ऐसी कहानियाँ है, जो बताती है कि सरकारी शालाएँ केवल शिक्षा नहीं देतीं बल्कि समग्र विकास की नई "संस्कृति" भी जगाती हैं।

विनोबा विशेष पेज 4-5

कक्षा 3 से ही स्कूलों में आएगी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): शिक्षा में बड़ा बदलाव

समाचार पेज 8

'शिक्षक जागरूक होंगे, तो छात्र भी जानकार बनेंगे'

गरियाबंद: ज़िला पंचायत के नवनियुक्त, युवा और ऊर्जावान मुख्य कार्यपालन अधिकारी, श्री प्रखर चंद्राकर (IAS), ज़िले की शिक्षा व्यवस्था को नए नज़रिये से देखने और उसमें सुधार लाने में पूरी शिद्दत से जुटे हुए हैं। प्रशासनिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ, वे स्कूलों की ज़मीनी हक़ीक़त, शिक्षकों की आवश्यकताओं और बच्चों की क्षमताओं को बहुत नज़दीक से समझने की कोशिश कर रहे हैं। टीम विनोबा से अपनी बातचीत में उन्होंने ज़िले की शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों, संभावनाओं और अपने आगामी कदमों पर खुलकर विचार रखे।

श्री प्रखर चंद्राकर (IAS), मुख्य कार्यपालन अधिकारी, गरियाबंद

फ़िलहाल ज़िले की शिक्षा व्यवस्था में सबसे बड़ी कमी क्या दिखाई देती है?

सबसे बड़ी कमी है जानकारी की। यहाँ के बच्चे IIT–NIT का नाम तो जानते हैं, पर उन्हें इसका महत्व नहीं मालूम और न ही यह कि वहाँ तक पहुँचने का रास्ता क्या है। मैंने खुद अपनी 12वीं कक्षा की पढ़ाई के दौरान IIT–NIT में दाख़िला कैसे मिलता है इसकी जानकारी बड़ी जद्दोजहद के बाद हासिल की थी। एक सीनियर की मदद से पता किया कि इसके लिए कौनसी अलग प्रवेश परीक्षाएँ होती हैं। आज भी सरकारी स्कूलों के बच्चों को, कभी-कभी गणित और विज्ञान पढ़ानेवालों को भी, यह रास्ता मालूम नहीं है।

इसके लिए पहले शिक्षकों को जागृत करना पड़ेगा। यदि शिक्षक जागरूक होंगे, तो छात्र भी जागरूक होंगे। एक बार बच्चों ने लक्ष्य तय कर लिया, फिर वे खुद ही रास्ता खोज लेते हैं। इसलिए मेरा पहला ध्येय यही है कि बच्चों और शिक्षकों का उन्मुखीकरण हो, ताकि वे प्रतियोगी परीक्षाओं की अहमियत को सही मायने में समझ सकें।

इस दिशा में कौन-सी चुनौतियाँ सामने नज़र आ रही हैं?

सबसे पहली चुनौती यही है कि बच्चों को यह पता ही नहीं है कि ये परीक्षाएँ उनकी ज़िंदगी बदल सकती हैं। अभी उनका ध्यान केवल बोर्ड परीक्षा तक सीमित रहता है। बोर्ड के बाद अधिकतर बच्चे पास के ही कॉलेज में दाख़िला ले लेते हैं, बिना यह सोचे कि वे इससे कहीं बेहतर जगह भी पहुँच सकते हैं। दूसरी चुनौती है—मार्गदर्शन की कमी। बच्चों को नहीं पता होता कि कौन-सा फॉर्म कब भरना है, कौन-सी किताबें पढ़नी हैं, या कितनी अभ्यास परीक्षाएँ देनी हैं। उन्हें यह जानकारी कहाँ से मिलेगी कि वे सही दिशा में जा रहे हैं या नहीं। कई बार शिक्षकों के पास भी आवश्यक तथ्य नहीं होते।

हमारी पहली कोशिश है कि अधिक से अधिक बच्चों से JEE–NEET के फॉर्म भरवाए जाएँ। उन्हें साप्ताहिक टेस्ट और आख़िर में क्रैश कोर्स करवाए जाएँ। यह योजना अभी अंतिम चरण में है और जल्द ही इसका एक मज़बूत ढाँचा तैयार हो जाएगा। इसे लागू करने के बाद अच्छे नतीजे मिलते हैं, तो हम इसे और विस्तार देंगे।

इसी तरह, टीम विनोबा के सहयोग से हम मिडिल स्कूल के बच्चों को JNV और NMMSE जैसी परीक्षाओं के लिए नियमित टेस्ट और कोचिंग दे रहे हैं। टीम विनोबा हमें पूरे ज़िले से उपयोगी और सटीक तथ्य उपलब्ध करवाते हैं—जो सरकारी तंत्र में हमेशा आसानी से नहीं मिल पाता।

आपने छात्रवृत्ति परीक्षाओं पर ज़ोर दिया है। इसके पीछे क्या सोच है?

हर ज़िले की ज़रूरतें अलग होती हैं। जहाँ तक गरियाबंद की बात है, यहाँ बच्चों की शिक्षा की बुनियाद ही कमज़ोर है। उनकी सीखने की गति उनकी उम्र के हिसाब से नहीं है। यह कमी योग्यता की नहीं है—हमारे बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं और सरकारी शिक्षक भी योग्य हैं। असल समस्या यह है कि बच्चों में यह आत्मविश्वास नहीं है कि वे निजी स्कूलों के बच्चों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकते हैं। हम इस ज़िले के केवल 1-2 बच्चों को भी IIT या NIT तक पहुँचाने में सफल होते हैं, तो यह पूरे ज़िले की सोच को बदल कर रख देगा।

बाकी छात्रों को भी यह महसूस होगा कि "हम भी यह कर सकते हैं।" चूँकि हमारे तीन ब्लॉक आदिवासी बहुल हैं, वहाँ से निकलकर अगर कोई बच्चा राष्ट्रीय स्तर की संस्था में पहुँचता है, तो उसका प्रभाव कई गुना ज़्यादा होता है—सिर्फ़ बच्चों पर ही नहीं, बल्कि शिक्षकों पर भी।

'गौरव गरियाबंद' परियोजना में पिछले दो वर्षों से टीम विनोबा भी जुड़ी है, और ज़िले की रैंकिंग में भी सुधार आया है।

हाँ, ज़िले की रैंकिंग में इज़ाफ़ा होना अच्छी बात है लेकिन हमारा लक्ष्य इससे कहीं आगे है। अभी 'फ़र्स्ट क्लास स्कोर' करने वाले बच्चों की संख्या संतोषजनक नहीं है। हम इस पर गंभीरता से चर्चा कर रहे हैं और अगले चरण की रणनीति तैयार कर रहे हैं, ताकि हम उपलब्धियों को स्थिर भी रख सकें और सीखने के स्तर को और भी ऊँचा ले जा सकें। ■

कूट प्रश्न 16 का उत्तर:
6 + 3 = 9 -- अंक 8 में से एक तीली हटेगी तो वह 6 बन जाएगा। इस तरह समीकरण संतुलित हो जाएगा।

कूट प्रश्न 16
एक तिली हटाकर समीकरण संतुलित करें।

गरियाबंद: ज़िला स्तरीय कार्यक्रम के दौरान 10 POM, स्पर्धा और शैक्षिक कार्यक्रमों के विजेताओं, 10वी और 12वी के उत्कृष्ट 3 स्कूलों और 3 CAC को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण DMC श्री एस के शुक्ला, APC श्री मनोज केला और APC श्री विल्सन थॉमस के हाथों हुआ।

रायगढ़: ज़िले में मई से अक्टूबर 2025 तक के ज़िला स्तरीय कार्यक्रम में 6 POM, 3 CAC, और 'बोलेगा बचपन' (कविता और कहानी वाचन) में 8 विजेताओं को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण DEO डॉ. केवी राव, DMC आलोक स्वर्णकार, APC किरण मिश्रा, अभय दुबे और भूपेंद्र पटेल द्वारा किया गया।

राजनांदगांव: ज़िले में अक्टूबर 2025 के जिला स्तरीय POM के 6 और विकासखंड स्तरीय 2 विजेताओं को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण सहायक DEO श्रीमती एस. खरे, APC मनोज मरकाम और शैक्षिक प्रभारी मनोज चौहान द्वारा किया गया।

धमतरी: ज़िला स्तरीय कार्यक्रम में 6 POM, 2 बोलेगा बचपन, 1 क्रिएटिव राइटिंग व 5 CAC शिक्षक विजेताओं को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण ADEO सुर्यवंशी, APC एन.के. साहू, APC खेमेन्द्र साहू, BRC ललित सिन्हा, APC लता साहू व APC प्रवीण साहू द्वारा किया गया।

गडचिरोली: ZP CEO सुहास गाडे व EO बाबासाहेब पवार ने जिला स्तरीय कार्यक्रम में 16 शिक्षक विजेताओं को POM, मॉर्निंग असेंबली, स्पेलिंग बी, महावाचन (कथा/चावडी वाचन, स्पोकन इंग्लिश), लाइब्रेरी बैग और ब्लॉक POM आदि श्रेणियों में तथा 9 क्लस्टर प्रमुखों को सम्मानित किया।

धाराशिव: ज़िला स्तरीय कार्यक्रम में कुल 8 शिक्षकों को सम्मानित किया गया, जिसमें 7 शिक्षक POM और 1 शिक्षक स्पेलिंग बी, श्रेणी के विजेता रहे। सम्मान वितरण शिक्षा अधिकारी (प्रा.) नागेश मापरी द्वारा किया गया।

भंडारा: ज़िले में टीम विनोबा द्वारा पोलस्टार प्रोग्राम ओरिएंटेशन आयोजित किया गया जिसमें छात्रों को JEE/NEET तैयारी, पोलस्टार CBT टेस्ट के महत्व, IIT/NIT में प्रवेश की प्रक्रिया व फॉर्म भरने की जानकारी दी गई। साथ ही, पूर्व 5 CBT टेस्ट का विश्लेषण साझा कर छात्रों को प्रेरित किया गया।

नागपुर: अक्टूबर माह के लिए ज़िला एवं ब्लॉक स्तर के POM व 'जीवन कौशल' श्रेणी के 4 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण APO निखिल वाघ व APO नंदिनी धवनजेवार द्वारा किया गया।

मौन की मुस्कान

सुकमा: मैं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, ओलेर का शिक्षक हूँ। रोज़ सुबह जब स्कूल पहुँचता हूँ, तो बच्चों की आवाज़ें मुझे अपनेपन का एहसास कराती हैं। जून 2025 की शुरुआत में, उन आवाजों के बीच मैंने कुछ अलग ही महसूस किया। वह एहसास था कक्षा 6 के एक नए छात्र परसूराम की आँखों में ठहरी खामोशी का।

परसूराम गाँव का ही एक बालक था। न सुन पाता था, न बोल पाता। हफ्ते में केवल एक दिन स्कूल आता और बाकी दिन गाँव की पगडंडियों पर अकेला भटकता रहता। मुझे उसकी बड़ी चिंता होती थी।

मुझे लगा उसके इस अकेलेपन का कारण मुझे जानना ही होगा। मैं उसके घर पहुँचा। घर क्या था—मिट्टी की दीवारें, धूप से तपा आँगन, और भीतर एक लंबी चुप्पी। पता चला कि उसके पिता को गुज़रे कई साल हो चुके हैं। माँ दूसरी शादी करके कहीं और बस गई थी। घर में सिर्फ बड़ा भाई था, जो उसकी देखभाल करता था।

उसने मुझसे कहा, "सर, परसू को समझना मुश्किल है। कभी-कभी अजीब हरकतें करता है। कैसे संभालूँ, समझ नहीं आता।"

मैंने परसूराम के भाई को कहा, "बस एक बात का वादा करो कि उसे रोज़ स्कूल भेजोगे। बाकी सब हम मिलकर संभाल लेंगे।" वह मान गया। उसी दिन से परसूराम की ज़िंदगी की दिशा बदलनी शुरू हुई।

अब वह प्रतिदिन स्कूल आने लगा। हम सभी शिक्षक, संकुल समन्वयक श्री दुर्देश पटेल, विशेष रूप से हमारे सहकारी शिक्षक श्री राधेश्याम दोहरे और हमारे कई छात्र उसके चारों ओर एक हल्का-सा, पर दृढ़ घेरा बनाए रहते थे। उसकी हर ज़रूरत का हम ध्यान रखते थे। बाकी बच्चों के साथ अक्षर अभ्यास और खेल में उसका व्यक्तित्व खिलने लगा। उसमें छोटे-छोटे परिवर्तन दिखने लगे।

शब्द उसके पास नहीं थे, पर कोशिश ज़रूर थी। अक्षर टेढ़े-मेढ़े थे लेकिन उसके मन में जो सीखने की ललक थी वह साफ दिखाई देती थी। मैं अक्सर उसकी कॉपी देखता और उसके हर छोटे प्रयास पर उसकी पीठ थपथपा देता। वह मुस्कुराता नहीं था पर उसकी आँखें बता देती कि उसे इस प्रोत्साहन से बहुत ऊर्जा मिल रही है।

आज परसूराम हमारे स्कूल का एक अनुशासित और मेहनती बालक है। जीवन ने उसे कई कठिनाइयाँ दीं, पर उसने हार नहीं मानी—और हमने भी नहीं।

उसकी प्रगति हम सब के लिए एक सामूहिक यात्रा रही है। उसके भाई का धैर्य, मेरे छात्रों का स्नेह, संकुल समन्वयक श्री दुर्देश पटेल जी का मार्गदर्शन—और पूरी शाला का साथ। हम सबने मिलकर एक बच्चे के भीतर छिपे मौन को आवाज़ दी है—बिना शब्दों के। शायद यही शिक्षा का सबसे सुंदर रूप है।

श्री भागीरथी नाग, शिक्षक, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, ओलेर, ज़िला सुकमा ■

'अलग होना, कम होना नहीं है'

सोलापुर: सोलापुर के SRP कैंप की ज़िला परिषद शाला में सुबह की धूप जैसे ही आँगन में उतरती, बच्चों की हलचल से जगह भर जाती। उसी हलचल के बीच एक दिन एक नया बच्चा आया—श्रीतीर्थ प्रदीप पर्वते। उसकी उम्र कम थी, पर वह मन में ढेर-सारा डर समेटे हुए था। अनजान चेहरों से वह घबरा जाता और दूर भागने लगता था। भागते-भागते कई बार गिर भी पड़ता था और हर चोट उसकी दहशत को और गहरा कर जाती थी।

पहले दिन उसकी माँ कक्षा के बाहर देर तक बैठी रही। जब शाला के मुख्याध्यापक श्री पुंडलिक लक्ष्मण कलखांबकर ने उन्हें भरोसा दिलाया कि शाला में श्रीतीर्थ की अच्छी देखभाल होगी, तब आनेवाले दिनों में माँ के रुकने का समय धीरे धीरे घटता गया।

बच्चों को देखने का पुंडलिक जी का अपना ढंग था। उन्होंने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि श्रीतीर्थ की राह अकेलेपन से नहीं, सबके साथ से बनेगी। उनका विश्वास था कि हर बच्चा, चाहे जैसा भी हो, सबसे पहले अपनापन चाहता है।

उन्होंने एक प्रयोग शुरू किया। हर कक्षा से कुछ बच्चों को चुना गया, जिन्हें उन्होंने समझाया, "जब भी श्रीतीर्थ

शेष पृष्ठ 5 पर...

कहानी सरकारी स्कूल के 'संस्कृति' की

यवतमाल: संस्कृती संतोष हेडाऊ का जवलगाँव की ज़िला परिषद शाला में आज पहला दिन था। चारों ओर की आवाज़ें उसे साफ़ सुनाई नहीं दे रही थीं, पर वह सुनने की पूरी कोशिश कर रही थी।

संस्कृती ने नागपुर में श्रवण प्रशिक्षण पाया था। उपचार कठिन था, दूरी अधिक थी और लॉकडाउन ने माता-पिता की राह और मुश्किल कर दी थी। पर उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने निर्णय लिया कि विशेष शाला के बजाय संस्कृति गाँव की सरकारी शाला में ही पढ़ेगी।

यहीं से संस्कृती का नया सफर आरंभ हुआ।

उसकी शिक्षिका, श्रीमती किरण पारसकर, उसपर विशेष ध्यान देने लगीं। किरणजी अक्सर

कहतीं, "संस्कृती कम बोलती है, पर उसकी आँखें बहुत कुछ बताती हैं।" उन्होंने चित्रों से उसे सिखाने की शुरुआत की, फिर वस्तुओं और खिलौनों का इस्तेमाल किया। संस्कृती हर इशारे को पकड़ लेती। वह अन्य बच्चों को देखती, उनके हाथों की नकल करती, वही किताब खोलती, वही रेखाएँ खींचती।

इस सफर में किरण जी के साथ समाज सेविका श्रीमती शीला कांबे भी थीं। दोनों का धैर्य संस्कृती के आत्मविश्वास का आधार बन गया।

इस बीच शाला में विनोबा ऐप के द्वारा एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। इस कार्यक्रम ने महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और बिहार के हज़ारों सरकारी स्कूलों में सीखने-सिखाने की कोशिश को नई दिशा दी है। विनोबा ऐप केवल तकनीक भर नहीं है, यह शिक्षकों के हाथ में एक भरोसे की रोशनी है। किरण मॅडम और शीला मॅडम भी इसी रोशनी से प्रेरित थीं।

संस्कृती अभी भी ध्वनियों को पूरी तरह नहीं सुन पाती पर शब्द उसके मन में आकार लेने लगे हैं। सबसे जरूरी बात, वह स्वयं को दूसरों से पीछे नहीं समझती। संस्कृती केवल पढ़ नहीं रही है, वह जीना सीख रही है।

यह एक ऐसी कहानी है, जो बताती है कि सरकारी शालाएँ केवल शिक्षा ही नहीं दे रही, बल्कि समग्र विकास की नई "संस्कृति" भी जगा रही हैं। ■

शेष पृष्ठ 4 से...

तुम्हारे पास आए, तो उसे अपनी पढ़ाई में या खेल में शामिल कर लेना। उसे लगे कि हम सब उसके अपने हैं।" जिन बच्चों ने यह ज़िम्मेदारी खुशी से उठाई, पुंडलिक जी उन्हें बुलाकर सराहते और छोटे-छोटे उपहार दे कर प्रोत्साहित करते।

कभी-कभी खेल के दौरान कोई खटपट भी हो जाती। ऐसे में पुंडलिक जी पूरे वर्ग को साथ बैठाते और बच्चों को धैर्य का महत्व समझाते। परिणाम-स्वरूप, बच्चों में नई संवेदनशीलता उभरने लगी।

श्रीतीर्थ के भीतर भी परिवर्तन आने लगा। वह जो पहले हर आवाज़ से दूर भागता था, अब कक्षा में नियमित तौर पर आने लगा और उसकी पढ़ाई में भी सुधार होने लगा। जो कभी बाहर भी झांकने से कतराता था—अब मैदान में खो-खो खेलता दिखने लगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह अब सुबह से शाम तक शाला में रह पाता था, बिना किसी डर या बेचैनी के। पुंडलिक जी के लिए यह उपलब्धि किसी भी परीक्षा के परिणाम से बड़ी थी।

जब इस बदलाव की कहानी गाँव के घरों तक पहुंची, तो कई अभिभावकों के मन की हिचक कम होने लगी। कुछ ही महीनों में पाँच और बच्चों का – अभिद्न्या, तन्मय, श्रीराम, नक्ष और शौर्य — स्कूल में दाखिला हो गया। श्रीतीर्थ की तरह ही इन बच्चों की देखभाल में चुनौतियाँ थीं—हर बच्चे को अलग समय देना, उनकी रोजमर्रा की छोटी ज़रूरतों का ध्यान रखना, उनमें से हर एक को अलग समूहों में रखना ताकि वे एक-दूसरे की घबराहट को न अपनाएँ।

इन्हीं बातों को समझते हुए, अभिभावकों के सहयोग से एक सहायिका को रखा गया, जो बच्चों की दिनभर की गतिविधियों में मदद करती। अब इन बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री है, सुरक्षित वातावरण है और अपनापन भी है। पुंडलिक जी नियमित रूप से माता-पिता से संवाद करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि बच्चे की प्रगति में सबसे अहम भूमिका घर की ही होती है।

आनेवाले समय के लिए पुंडलिक जी के मन में और भी योजनाएं हैं। जैसे-जैसे ये बच्चे आगे बढ़ेंगे, वे उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी शामिल करना चाहते हैं। उनकी यह भी इच्छा है कि प्रशासन हर शाला में विशेष सहायकों की व्यवस्था करे ताकि हर बच्चे का समग्र विकास हो सके।

आज पुंडलिक जी जब स्कूल के आँगन में खड़े होकर बच्चों को खेलते देखते हैं, तो उनके मन में एक ही भावना गूँजती है, "अलग होना, कम होना नहीं है।" ■

'टेक्नॉलॉजी केवल साधन है, शिक्षकों का विकल्प नहीं'

दुर्ग: "बच्चों, बताओ हम सब स्कूल क्यों आते हैं?" शिक्षिका ने अपनी कक्षा 6 के विद्यार्थियों से बातचीत शुरू करते हुए पूछा। बच्चों के उत्तर ने उन्हें निराश कर दिया।

"हम इसलिए आते हैं क्योंकि हमारे माता-पिता हमें रोज़ यहाँ भेजते हैं।"

श्रीमती मनीषा अवस्थी, निजी विद्यालयों में 22 साल के अध्यापन के बाद स्वामी आत्मानंद शासकीय इंग्लिश मीडियम स्कूल, दीपकनगर, में माध्यमिक शाला की प्रधान अध्यापिका बनकर आई थीं। विद्यार्थियों में इस प्रकार की जागरूकता की कमी देखकर उनका दिल बैठ गया।

अधिकांश बच्चे साधारण परिवारों से आते थे। उनके माता-पिता छोटे-मोटे मौसमी कामों में लगे थे। बच्चों के मन में यह धारणा बैठी थी कि बड़े होकर उन्हें भी यही करना है। शिक्षा का सही उद्देश्य उन्हें पता ही नहीं था। पढ़ाई को लेकर उनमें अधिक दिलचस्पी नहीं थी। भाषाएँ, गणित और विज्ञान समझना उनके लिए पहाड़ चढ़ने जैसा था।

समस्या सिर्फ़ बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि तक सीमित नहीं थी। थोड़ी पड़ताल की तो समझ आया कि स्कूल का रोज़ का कार्यक्रम ही इतना नीरस था कि बच्चे उसमें रुचि लेते भी तो कैसे - न कोई पिकनिक, न कोई अतिरिक्त गतिविधियाँ। शिक्षक केवल क्लास लेने आते, बच्चों को दोपहर का खाना मिलता और फिर उन्हें घर भेज दिया जाता। यह सिलसिला रोज़ ऐसे ही चलता था।

मनीषा जी को एहसास हुआ कि अगर सच में बदलाव लाना है, तो पारंपरिक तरीकों से कुछ नहीं होगा। उन्होंने मन ही मन सोचा, "सरकारी स्कूलों का बजट सीमित हो सकता है, लेकिन शिक्षकों और बच्चों की कल्पनाशक्ति की थोड़े ही कोई सीमा होती है।"

उन्होंने सबसे पहले बच्चों को बोलने और अपनी बात रखने के लिए प्रेरित किया; ज़ोर से पढ़ने की आदत डलवाई, आशु भाषण कराए, उनके अंदर की कला को निखारा और 'बस्तामुक्त शनिवार' के दिन कलाकारों और विशेषज्ञों को बुलाकर उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण दिलवाया; प्रेरणादायक फिल्में दिखाईं, किताबों से दोस्ती करवाई; और बच्चों की सीखने में रुचि बढ़े इसलिए 'वर्चुअल रीऐलिटी टूल्स' का सहारा लिया।

इतना ही नहीं, इतिहास, भूगोल और नागरिकशास्त्र को समझाने के लिए एक अनूठी प्रदर्शनी आयोजित की, बच्चों को अपने विषयों को रोचक तरीके से प्रस्तुत करने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने बच्चों को इंटरनेट की बजाय डिक्शनरी का उपयोग करने की आदत डलवाई ताकि वे सही शब्द और उनके अर्थ खुद तलाशें। गणित की पढ़ाई को आसान बनाने के लिए एक गणित लैब भी तैयार की, जिसमें ढेरों TLM रखे।

मनीषा जी का मानना था कि तकनीक शिक्षकों की जगह नहीं ले सकती लेकिन सही तरीके से इस्तेमाल की जाए तो यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को कहीं अधिक प्रभावी बना सकती है। इसे साबित करने के लिए उन्होंने वर्चुअल क्लासरूम बनाए जहां पढ़ाई को नई रोचकता मिली।

यह सब आसान नहीं था। कई बार संसाधनों की कमी आड़े आई लेकिन उनकी टीम के पाँच समर्पित शिक्षकों ने हर कदम पर उनका साथ दिया। जब उन्होंने बच्चों को पिकनिक पर ले जाने का सुझाव दिया, तो उनकी टीम ने अपनी तनख्वाह से पैसे जोड़कर इसे संभव बनाया।

"जब तक ये बच्चे बाहर की दुनिया नहीं देखेंगे, तब तक उनके सपने बड़े कैसे होंगे?" यही सोचकर वह एक बार कुछ बच्चों को अपनी कार में एक नामी निजी स्कूल में होने वाली उच्च स्तरीय क्विज़ प्रतियोगिता देखने के लिए ले गईं।

मनीषा जी के यूट्यूब चैनल के ज़रिए उनके नवाचारी तरीके दूसरे ज़िलों के और राज्यों के शिक्षक भी सीख रहे हैं। उनके इन्ही वीडियो के लिए उन्हें 'विनोबा पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार मिला। उनके लिए सबसे बड़ी ख़ुशी तब होती है, जब POM से मिले उपहारों को वे अपने विद्यार्थियों में बाँटती हैं और उनके चेहरे खुशी से खिल उठते हैं।

"जब तक ये बच्चे बाहर की दुनिया नहीं देखेंगे, तब तक उनके सपने बड़े कैसे होंगे?" यही सोचकर वह एक बार कुछ बच्चों को अपनी कार में एक नामी निजी स्कूल में होने वाली उच्च स्तरीय क्विज़ प्रतियोगिता देखने के लिए ले गईं।

जब हमने उनसे पूछा कि उनके प्रयासों का असर कितना दिख रहा है, तो उन्होंने एक लंबी साँस लेकर कहा, "यह जो अशिक्षा है न, यह बहुत पुरानी और गहरी है। इसे मिटाने में अभी बहुत वक़्त लगेगा। लेकिन मैं इतनी जल्दी हार मानने वालों में से नहीं हूँ।"

नतीजे शायद अभी पूरी तरह नज़र न आए हों, लेकिन टीम विनोबा को जो बदलाव दिख रहे हैं, वे आशाजनक हैं। बच्चे अब पढ़ाई में रुचि लेने लगे हैं, वे बिना कहे पढ़ने-लिखने लगे हैं, प्रस्तुतियाँ देने और प्रयोग करने के लिए तैयार हैं। ■

उपहार की धुन, बहानों से छुट्टी!

दंतेवाड़ा: पहले शनिवार को स्कूल आधा खाली रहता था। लेकिन आजकल पटेलपारा परचेली की प्राथमिक शाला में बच्चे दरवाज़े पर स्वयं ही दस्तक देकर पूछने लगे हैं, "मैडम, आज तो 'बस्ताविहीन शनिवार' है ना? वाचन और गतिविधियों का दिन!" इसलिए शिक्षिका श्रीमती लता साहू आजकल बहुत खुश रहतीं हैं और मानती हैं कि इस बदलाव का कारण है विनोबा ऐप।

दरअसल, जब से लता जी ने दैनिक गतिविधियों के वीडियो बनाकर ऐप पर अपलोड करना शुरू किया, बच्चों की पढ़ाई में दिलचस्पी बढ़ गई थी। उनके वीडियो पर आनेवाली 'लाइक्स' और 'रिएक्शन्स' ने उनका शिक्षा की ओर रुझान बढ़ा दिया था।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण तब देखने को मिला, जब पाँच दिन बुखार से जूझने के बाद पहली कक्षा का आसू वाशी स्कूल के दरवाज़े पर हाज़िर हो गया।

"आसू! तुम आ गए? तुम्हारा बुखार कैसा है?" लता जी ने आश्चर्य से पूछा।

आसू ने कहा, "मैडम, अगर मैं आज नहीं आता, तो मेरी हाज़िरी कम हो जाती। फिर आप पुरस्कार में मुझे वह नया वाला कंपास बॉक्स नहीं देतीं!"

लता जी हँस पड़ीं। उन्होंने आसू को समझाया कि उपहार तो बस एक बहाना है, असली इनाम तो उसकी लगन है। पर उन्हें पता था, इस मासूम ज़िद के पीछे उनकी लगातार मेहनत और विनोबा कार्यक्रम का प्रोत्साहन छिपा था।

यह किस्सा महज़ पटेलपारा का नहीं है। ओपन लिंक्स फाउंडेशन (O L F) का आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम, इसी तरह महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और बिहार के 60,000 से अधिक सरकारी स्कूलों और लगभग 2 लाख शिक्षकों को प्रेरित और सशक्त कर रहा है।

सरकारी स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता को निजी स्कूलों से बेहतर बनाने की इस मुहिम में, लता जी जैसी शिक्षिकाएँ बदलाव की वाहक हैं। विनोबा ऐप उन्हें वह मंच और प्रोत्साहन देता है जिससे उनके प्रयास दोगुने हो जाते हैं। आज, जब आसू कंपास बॉक्स को नहीं, बल्कि अपनी किताब को गर्व से देखता है, तो लता जी मुस्कुराती हैं। उन्हें एहसास होता है कि एक शिक्षक का जीवन में, प्रेरणा का एक छोटा सा उपहार, उपस्थिति की बड़ी जंग जीत सकता है! ■

कविता

नाही पंढरीशी जाणे,
नाही केली कधी वारी,
माझी कर्मभूमी,
हीच माझी रोजची
पंढरी.
माझा खडू-फळा,
माझे टाळ- वीणा नी
मृदुंग, फुले
ज्ञानाची घेऊन,
रोज रंगतो अभंग.
मन मोकळे कराया,
जेव्हा येतात लेकरें,
त्यांच्या डोळ्यातले पाणी,
माझे चंद्रभागा तीर.
त्यांचे दुःख निवारून,
देतो दान आनंदाचे,
काही वेगळे आहे का,
पुण्य देव दर्शनाचे ?

ज्ञानदानाचे हे व्रत,
हीच माझी एकादशी,
माझ्या लेकराचे यश,
माझे प्रयाग नी काशी.

जेव्हा येतात लेकर,
सुख-दुःख वाटायला,
त्यांच्या रुयाने विठ्ठल,
रोज येतो भेटायला.....

श्री.सत्यवान लोखंडे
मुख्याध्यापक,
जिल्हा परिषद
आदर्श शाळा धानोरे,
तालुका-खेड,
जिल्हा पुणे.

सफलता के लिए भाषाओं पर पकड़ आवश्यक: हिंगोली ज़िलाधिकारी

हिंगोली: सफलता के लिए दो तरह के कौशल आवश्यक हैं: मराठी और अंग्रेज़ी भाषाओं पर अच्छी पकड़, और मज़बूत तार्किक दृष्टिकोण," यह बात हिंगोली के ज़िलाधिकारी श्री राहुल गुप्ता ने 'नन्हे सितारे' इस जीवन-कौशल आधारित कार्यक्रम के ज़िला स्तरीय समापन समारोह में कही। ज़िला परिषद हिंगोली और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के संयुक्त आयोजन में यह भव्य कार्यक्रम 15 अक्टूबर 2025 को उत्साहपूर्ण माहौल में संपन्न हुआ।

समारोह में श्री गुप्ता ने बताया कि ज़िला प्रशासन ने DIET की मदद से एक विशेष 30 घंटे का अध्ययन कार्यक्रम तैयार कर पूरे ज़िले के हर स्कूल तक पहुँचाया है, जिसमें गणित, विज्ञान और भाषाओं के महत्वपूर्ण घटक शामिल हैं।

यह पाठ्यक्रम इतना सरल बनाया गया है कि माता-पिता भी इसे समझकर बच्चों की पढ़ाई में सहयोग कर सकें।

इस कार्यक्रम में शिक्षाधिकारी (योजना) श्री संदीप कुमार सोनटक्के, शिक्षाधिकारी श्री प्रशांत दिग्रसकर, DIET प्राचार्य भानुदास पुटवाड और OLF की स्टेट हेड चित्रा खन्ना भी उपस्थित थे। 'नन्हे सितारे' पहल का उद्देश्य केवल प्रतियोगिता आयोजित करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के भाषाई कौशल को विकसित करना, उनमें आत्मविश्वास बढ़ाना और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को सही मंच देना है।

सितंबर में शुरू हुई इस पहल को ज़िले की सभी प्राथमिक शालाओं से उत्साहपूर्ण सहभाग मिला। स्कूल और तालुका स्तर की प्रारंभिक दौर के बाद चुने गए कुल 22 प्रतिभागी अंतिम दौर में ज़िला स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के लिए एकत्र हुए, जिनका मूल्यांकन शिक्षा और साहित्य जगत के अनुभवी एवं प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने किया। चार आयु-समूहों में स्पोकन इंग्लिश, स्पेलिंग बी, कथावाचन और कविता वाचन की विभिन्न प्रतियोगिताएँ हुईं।

'नन्हे सितारे' प्रतियोगिता हिंगोली में हाल ही में शुरू किए गए "आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहाय्यक कार्यक्रम" के अंतर्गत आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य सरकारी स्कूलों में सीखने की विधियों को और सशक्त बनाना है। ■

महाराष्ट्र राज्य बोर्ड को पहली बार मिला एक आईएएस अध्यक्ष

महाराष्ट्र सरकार ने श्री त्रिगुण कुलकर्णी (IAS) को राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (MSBSHSE) का नया अध्यक्ष नियुक्त किया है। यह पहली बार है जब बोर्ड का नेतृत्व किसी आईएएस अधिकारी को सौंपा गया है। अब तक यह पद शिक्षा विभाग की राज्य सेवा के वरिष्ठ अधिकारियों के पास रहता था।

सरकार का मानना है कि बोर्ड की परीक्षाओं, प्रशासनिक प्रक्रियाओं और तकनीकी आधुनिकीकरण से जुड़ी चुनौतियाँ लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में बेहतर प्रबंधन, तेज़ निर्णय-क्षमता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए उच्च प्रशासनिक अनुभव वाले अधिकारी की नियुक्ति आवश्यक है। इसी उद्देश्य से श्री त्रिगुण कुलकर्णी को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। नए अध्यक्ष से उम्मीद है कि वे परीक्षा-व्यवस्था, मूल्यांकन-प्रक्रिया और स्कूल-स्तरीय नीतियों में तेज़ और ठोस सुधारों का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

कक्षा 3 से ही स्कूलों में आएगी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

केंद्र सरकार ने घोषणा की है कि आगामी शैक्षणिक सत्र 2026–27 से देशभर के स्कूलों में कक्षा 3 से ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाएगा। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचे में यह बदलाव इसलिए किया जा रहा है ताकि बच्चे छोटी उम्र से ही डिजिटल साक्षरता, तकनीकी सोच और समस्या-समाधान में आगे बढ़ सकें।

इस कदम की सबसे बड़ी अहमियत यह है कि अभी तक AI को केवल उच्च कक्षाओं या व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में ही सिखाया जाता था। अब इसे शुरुआती स्तर पर सरल, खेल-आधारित और उम्र-अनुकूल तरीके से पढ़ाया जाएगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह बदलाव भविष्य की नौकरियों, विज्ञान-तकनीक और दैनिक के जीवन में तेज़ी से बढ़ती AI-आधारित दुनिया के लिए बच्चों को समय रहते तैयार करेगा। शिक्षा मंत्रालय का कहना है कि पाठ्यक्रम की रूपरेखा ऐसी होगी, जो सरकारी, अनुदानित और ग्रामीण स्कूलों के लिए भी सहजता से लागू की जा सके, ताकि डिजिटल विभाजन कम हो। भविष्य में शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूल स्तर पर आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने के दिशानिर्देश भी जारी किए जाएंगे।

सरकार के इस फैसले को स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नीतिगत मोड़ माना जा रहा है, जो देशभर के बच्चों को 'तकनीकी भविष्य' के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। ■

हिंगोली के 31 स्कूलों में 24x7 पुस्तकालय–अध्ययन कक्ष

हिंगोली ज़िला परिषद ने वाचन वीर नामक नई पहल के तहत अपने 31 स्कूलों में 24x7 पुस्तकालय और अध्ययन कक्ष शुरू किए हैं। इस कदम का उद्देश्य ग्रामीण बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं और आगे की पढ़ाई के लिए बेहतर माहौल और संसाधन उपलब्ध कराना है। इन अध्ययन कक्षों में सौर ऊर्जा से बिजली की व्यवस्था की गई है। उपयोगी पुस्तकें और रोजमर्रा की पढ़ाई में मदद करने वाली शैक्षिक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई है। यह पहल उन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जा रही है, जिन्हें घर पर अध्ययन के लिए शांत वातावरण या पर्याप्त संसाधन नहीं मिल पाते। ज़िला स्तर पर इसे एक प्रेरक मॉडल के रूप में देखा जा रहा है। ■

कूट प्रश्न 17

Format: Hindi Word Riddle

सिर + टक्कर = ?

(संकेत: जहां सीखना होता है)

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, ज़िला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन ऑफिस नं. 403, पिकासो केदारी लैंडमार्क, केदारी नगर, वानवडी, पुणे – 411 040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापिका: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**